



शेर बनाने का अपराधी कौन?

बेताल-पच्चीसी बाईसवीं कहानी

कुसुमपुर नगर में एक राजा राज्य करता था। उसके नगर में एक ब्राह्मण था, जिसके चार बेटे थे। लड़कों के सयाने होने पर ब्राह्मण मर गया और ब्राह्मणी उसके साथ सती हो गयी। उनके रिश्तेदारों ने उनका धन छीन लिया। वे चारों भाई नाना के यहाँ चले गये। लेकिन कुछ दिन बाद वहाँ भी उनके साथ बुरा व्यवहार होने

लगा। तब सबने मिलकर सोचा कि कोई विद्या सीखनी चाहिए। यह सोच करके चारों चार दिशाओं में चल दिये।

कुछ समय बाद वे विद्या सीखकर मिले। एक ने कहा, “मैंने ऐसी विद्या सीखी है कि मैं मरे हुए प्राणी की हड्डियों पर मांस चढ़ा सकता हूँ।”

दूसरे ने कहा, “मैं उसके खाल और बाल पैदा कर सकता हूँ।”

तीसरे ने कहा, “मैं उसके सारे अंग बना सकता हूँ।”

चौथा बोला, “मैं उसमें जान डाल सकता हूँ।”

फिर वे अपनी विद्या की परीक्षा लेने जंगल में गये। वहाँ उन्हें एक मरे शेर की हड्डियाँ मिलीं। उन्होंने उसे बिना पहचाने ही उठा लिया। एक ने माँस डाला, दूसरे ने खाल और बाल पैदा किये, तीसरे ने सारे अंग बनाये और चौथे ने उसमें प्राण डाल दिये। शेर जीवित हो उठा और सबको खा गया।

यह कथा सुनाकर बेताल बोला, “हे राजा, बताओ कि उन चारों में शेर बनाने का अपराध किसने किया?” राजा ने कहा, “जिसने प्राण डाले उसने, क्योंकि बाकी तीन को यह पता ही नहीं था कि वे शेर बना रहे हैं। इसलिए उनका कोई दोष नहीं है।”

यह सुनकर बेताल फिर पेड़ पर जा लटका। राजा जाकर फिर उसे लाया। रास्ते में बेताल ने एक नयी कहानी सुनायी।

बेताल पच्चीसी - **Betal Pachchisi**

बेताल पच्चीसी पच्चीस कथाओं से युक्त एक ग्रन्थ है। इसके रचयिता बेतालभट्ट बताये जाते हैं जो न्याय के लिये प्रसिद्ध राजा विक्रम के नौ रत्नों में से एक थे। ये कथायें राजा विक्रम की न्याय-शक्ति का बोध कराती हैं। बेताल प्रतिदिन एक कहानी सुनाता है और अन्त में राजा से ऐसा प्रश्न कर देता है कि राजा को

उसका उत्तर देना ही पड़ता है। उसने शर्त लगा रखी है कि अगर राजा बोलेगा तो वह उससे रूठकर फिर से पेड़ पर जा लटकेगा। लेकिन यह जानते हुए भी सवाल सामने आने पर राजा से चुप नहीं रहा जाता।

बैताल पचीसी की कहानियाँ भारत की सबसे लोकप्रिय कथाओं में से हैं। इनका स्रोत राजा सातवाहन के मन्त्री “गुणाढ्य” द्वारा रचित “बड कहा” (संस्कृत : बृहत्कथा) नामक ग्रन्थ को दिया जाता है जिसकी रचना ई. पूर्व ४९५ में हुई थी। कहा जाता है कि यह किसी पुरानी प्राकृत में लिखा गया था और इसमें ७ लाख छन्द थे। आज इसका कोई भी अंश कहीं भी प्राप्त नहीं है। कश्मीर के महाकवि सोमदेव भट्टराव ने इसको फिर से संस्कृत में लिखा और कथासरित्सागर नाम दिया। बड़कहा की अधिकतम कहानियों को कथा सरित्सागर में संकलित कर दिए जाने के कारण ये आज भी हमारे पास हैं। “बैताल पञ्चविंशति” यानी बैताल पचीसी “कथासरित्सागर” का ही भाग है। समय के साथ इन कथाओं की प्रसिद्धि अनेक देशों में पहुँची और इन कथाओं का बहुत सी भाषाओं में अनुवाद हुआ। बैताल के द्वारा सुनाई गई यो रोचक कहानियाँ केवल दिल बहलाने के लिये नहीं हैं, इनमें अनेक गूढ अर्थ छिपे हैं। क्या सही है और क्या गलत, इसको यदि हम ठीक से समझ लें तो सभी प्रशासक राजा विक्रम कि तरह न्यायप्रिय बन सकेंगे और छल व द्वेष छोड़कर, कर्म और धर्म की राह पर चल सकेंगे। इस प्रकार ये कहानियाँ न्याय, राजनीति और विषण परिस्थितियों में सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास करती हैं।

1. बेताल-पच्चीसी पहली कहानी
2. बेताल-पच्चीसी दूसरी कहानी
3. बेताल-पच्चीसी तीसरी कहानी
4. बेताल-पच्चीसी चौथी कहानी
5. बेताल-पच्चीसी पाँचवीं कहानी
6. बेताल-पच्चीसी छठी कहानी
7. बेताल-पच्चीसी सातवीं कहानी
8. बेताल-पच्चीसी आठवीं कहानी
9. बेताल-पच्चीसी नवीं कहानी
10. बेताल-पच्चीसी दसवीं कहानी
11. बेताल-पच्चीसी ग्यारहवीं कहानी
12. बेताल-पच्चीसी बारहवीं कहानी
13. बेताल-पच्चीसी तेरहवीं कहानी
14. बेताल-पच्चीसी चौदहवीं कहानी
15. बेताल-पच्चीसी पन्द्रहवीं कहानी
16. बेताल-पच्चीसी सोलहवीं कहानी
17. बेताल-पच्चीसी सत्रहवीं कहानी
18. बेताल-पच्चीसी अठारहवीं
19. बेताल-पच्चीसी उन्नीसवीं कहानी
20. बेताल-पच्चीसी बीसवीं कहानी
21. बेताल-पच्चीसी इक्कीसवीं कहानी
22. बेताल-पच्चीसी बाईसवीं कहानी
23. बेताल-पच्चीसी तेईसवीं कहानी
24. बेताल-पच्चीसी चौबीसवीं कहानी
25. बेताल-पच्चीसी पच्चीसवीं कहानी

